दिनांक | पुनरावर्तन | दिवस–135

शिक्षण–निर्देश :

विद्यार्थियों को 'नानी तेरी मोरनी' कविता का पुनरावर्तन करवाएँ तथा कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ की समझ दें।

'नानी तेरी मोरनी' कविता को पूरा कीजिए –

नानी ———— मोरनी को ———— ले गए,

बाकी जो ———— था काले ———— ले गए।

खाके पीके ———— होके ———— बैठे रेल में,

चोरों वाला ———— कटके पहुँचा सीधा ———— में।

कविता की पंक्तियों को क्रम से सजाकर बॉक्स में फिर से लिखिए –

मोरों को भी खूब नचाया जंगल की सरकार ने।

उन चोरों की खूब खबर ली मोटे थानेदार ने ,

जल्दी से इक पैसा दे दे तू कंजूसी छोड़ दे।

अच्छी नानी प्यारी नानी रूसा–रूसी छोड़ दे,

अपनी पसंद का चित्र बनाइए–

दिनांक

पुनरावर्तन

दिवस–136

शिक्षण–निर्देश :

विद्यार्थियों से 'कौआ और लोमड़ी' की कहानी का अलग–अलग समूह में मंचन करवाएँ।

चित्र देखिए और कहानी को पूरा कीजिए–

एक कौआ और एक ……**लोमड़ी**…… थी। कौए को कहीं से एक ………………… मिली। कौआ रोटी लेकर

पर बैठ गया। तभी वहाँ लोमड़ी आ गई। लोमड़ी ने ……………… की ………………… में रोटी देखा। लोमड़

वह रोटी ………… चाहती थी। लोमड़ी ने एक ………………… सोचा और ……………… से कहा– सुना है तुम

बहुत अच्छा ……………… हो! मैं भी तुम्हारा ……………… सुनना चाहती हूँ। कौआ अपनी ………………… सुनकर

बहुत ………………… हो गया और गाना ……………… लगा। कौए ने जैसे ही गाना शुरू किया, उसके चोंच

से रोटी ……………… गिर गई। रोटी जैसे ही नीचे ………………… लोमड़ी ने उसे ले लिया और चला गया।

सोचिए और बताइए –

(क) एक सप्ताह में दिन –

(ग) एक वर्ष में दिन –

(ख) एक महीने में दिन –

(घ) एक दिन में घण्टे –

दिनांक

पुनरावर्तन

दिवस–137

शिक्षण–निर्देश :

विद्यार्थियों को 'मेला' कविता का पुनरावर्तन करवाएँ तथा कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ की समझ दें।

शब्दों से कविता पूरी कीजिए–

घर के पास लगा था .....

उसमें आया चाट का .....

हमनें जाकर खाई .....

ऐसे थे मेले के .....

..... पास लगा था मेला,

उसमें आया .....

..... नहीं समाए फूले।

घर के ..... लगा था मेला,

उसमें एक ..... वाला,

लाए जाकर .....

रंग–बिरंगे बड़े .....

..... के पास लगा था मेला,

हमने देखा मन .....

..... दोनों साथ।।

मेले के थे ऐसे .....

झुले, ठेले, ...

दिनांक

पुनरावर्तन

दिवस–138

शिक्षण–निर्देश :

विद्यार्थियों को अलग–अलग समूह में बाँटकर 'चूँ–चूँ की टोपी' एकांकी का मंचन करवाएँ।

चूँ–चूँ चूहा अपनी टोपी बनवाने के लिए किस–किस के पास जाता है, लिखिए–

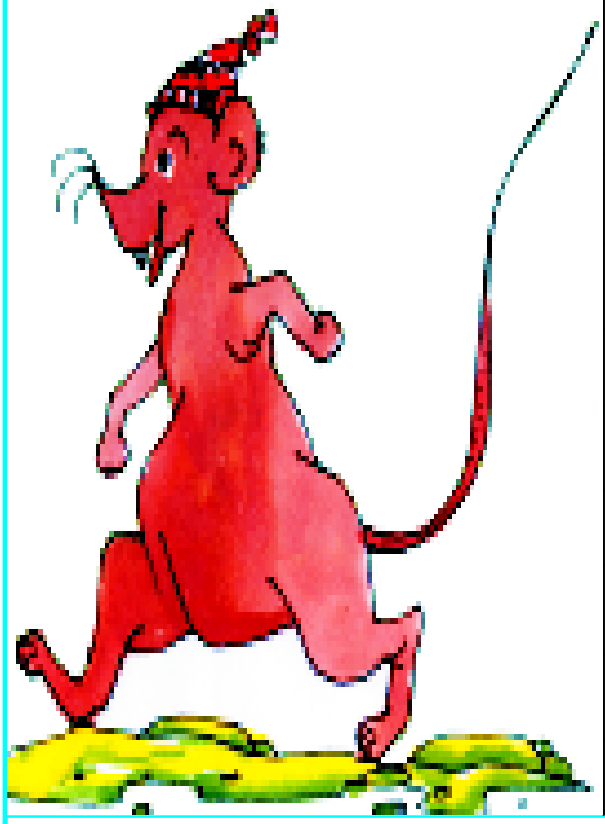

चूँ–चूँ चूहा का चित्र बनाइए–